Peer Reviewed Referred and UGC
Listed Journal (Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

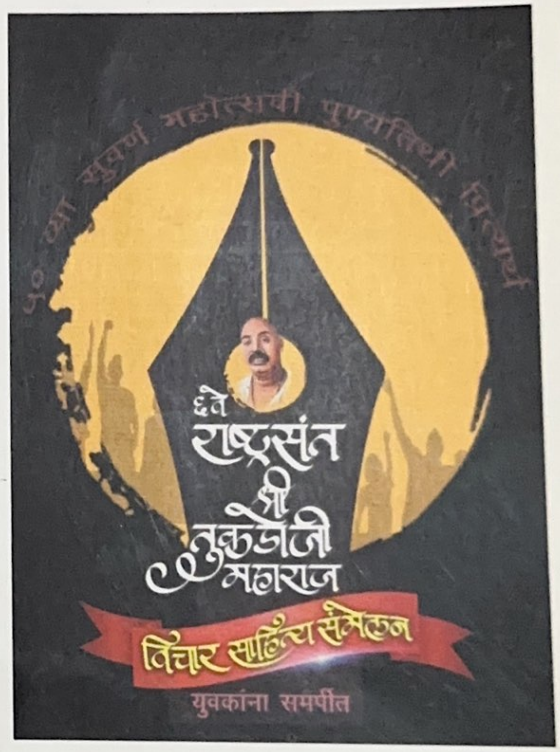

Volume-IX, Issue-I
January - March - 2020
Marathi Part - III, Hindi & English

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

MARATHI PART - III / HINDI / ENGLISH

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	राष्ट्रसंत का संगीत विषयक दृष्टिकोन **डॉ. श्वेता दीपक वेगड**	१-५
२	संत तुकडोजी महाराज का साहित्य : मानवतावादी दृष्टिकोण एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता **डॉ. प्रवीण देशमुख**	६-१०
३	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज : संगीतमय युगपुरुष **डॉ. कौमुदी क्षीरसागर (बर्डे)**	११-१३
४	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के मुखर योद्धा राष्ट्रसंत तुकडोजी तथा महात्मा गांधी **प्रा. डॉ. संदीप रमेश हातेवार**	१४-१८
५	राष्ट्रसंत तुकडोजी के जीवन मूल्य संबंधी विचारों को जीवन दर्शन **डॉ. रमेश टी. बावनथड़े**	१९-२२
६	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का विविधांगी दृष्टिकोण **राजकन्या राघोजी भगत**	२३-२७
७	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज और वैराग्यमूर्ति गाडगेबाबा **डॉ. संजय थोटे**	२८-३१
८	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का सांगीतिक दृष्टिकोण **प्रा. डॉ. स्नेहाशीष दास**	३२-३४
९	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का युवाओं को आवहान **प्रा. ईश्वरी खटवानी**	३५-३८
१०	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का स्त्री विषयक दृष्टिकोण **प्रा. सुषमा मा. नरांजे**	३९-४१
११	संत परंपरा में भक्ति संगीत का स्थान तथा राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज की खंजडी भजन परम्परा **प्रा. डॉ. सुनील भि. कोल्हे**	४२-४५

VOLUME - IX, ISSUE - I – JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

१०. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का स्त्री विषयक दृष्टिकोण

प्रा. सुषमा मा. नरांजे
सहाय्यक प्राध्यापक, एस.एस. गर्ल्स कॉलेज, गोंदिया.

संतों और विद्वानों ने अपना समाज सुधार आंदोलन अपने साहित्य के माध्यम से चलाया. अन्य आंदोलनों की भाँति स्त्री–सुधार संबंधी आंदोलन भी संतों के समाजसुधार का एक हिस्सा रहा है। वस्तुतः भारत के सभी संतो के साहित्य और समाजकार्यो में स्त्री उध्दार विषयक तड़प दिखाई देती है। यथा महर्षि अण्णासाहेब कर्वे, स्वामी दयानंद सरस्वती स्वामी विवेकानंद, महात्मा फूले आदि विद्वानों और समाजसुधाराकों ने अपने समय में स्त्री उध्दार के लिए उत्कटता से प्रयास किया । वास्तव में संपूर्ण मानव समाज में दो ही जातियॉ है – एक पुरुष जाती और दूसरी स्त्री जाती । इनमें स्त्रीजाती अत्यंत पिछडी हुई है इसलिए उसकी उन्नती की सर्वाधिक आवश्यकता है, क्योंकि उसी की गोद में समूचा नया मानव समाज खेलता और पलता रहता है।

समय परिवर्तित होता है और उसका निरंतर प्रभाव सामाजिक स्थिती पर होता है। प्राचीनकालीन भारतीय स्त्रीयों की स्थिती से 20 वी सदी की स्त्रीयों का जीवन और उनकी समस्याओं में अंतर दिखाई देता है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का कालखंड इ.स. 1909 से 1968 तक था । स्वतंत्रता पूर्व भारतीय संस्कृती में स्त्रीयों के जीवन को उन्होंने नजदिक से देखा था और स्त्रातंत्र्योत्तर भारतीय संस्कृती में धीरे–धीरे पथभ्रष्ट होती हुई स्त्रीयों को भी उन्होने देखा था । इस प्रकार स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद स्त्रीयों के जीवन में निर्माण हुए परिवर्तन और समस्याओं को आधार बनाकर उन्होंने एक आदर्ष भारतीय स्त्री का चित्र अपनी रचना 'ग्रामगीता' के माध्यम से साकार किया,

20 वी सदी में रचित संत तुकडोजी महाराज का साहित्य भारत की अमूल्य संस्कार संपात्ति है। मुख्यतः उनकी 'ग्रामगीता– अत्याधिक लोकप्रिय हुयी। इस 'ग्रामगीता' में महिलोन्नती नामक 20 वे अध्याय में तुकडोजी महाराज ने स्त्रीजीवन विषयक विचार प्रस्तुत किये है। इसमें तुकडोजी का स्त्री विषयक दृष्टिकोण अत्यंत शास्त्रशुध्द और आधुनिक स्वरुप का दिखाई देता है। स्त्रीयों का समाज में क्या स्थान है? और क्या होना चाहिए? इसका भी विस्तृत विष्लेषण उन्होंने 'ग्रामगीता' में किया है। 'ग्रामगीता' के माध्यम से राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने भारतीय स्त्री ने अनोखे और विशेषताओं से युक्त व्यक्तित्व के दर्शन कराने का प्रयास किया है।

तुकडोजी महाराज के अनुसार स्त्री भी पुरुष के समान सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है। पुरुषों के समान उसका स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व है। स्त्रीयों के पारंपारिक परिस्थिती में परिवर्तन करने का विशाल दृष्टिकोण उनका दिखाई देता है। जन्म से लेकर मृत्युतक पुरुष की छत्रछाया में रहकर केवल घर और बच्चा संभालने तक ही वे स्त्री को संकुचित नही करना चाहते । स्त्रीजीवन का सूक्ष्म अवलोकन करके महाराज ने बताया की परिवार का महत्वपूर्ण घटक होते हुए भी स्त्री किस प्रकार उपेक्षित है। उसकी क्या पीडा है। उसकी क्या वेदनाएँ है? उसकी क्या व्यथा है? स्त्रीयों की पीडा का अनुभव करके ही तुकडोजी महाराजने अपने भाषण भजन और साहित्य के माध्यम से उसके जीवन की समस्याओं का निराकरण करके का प्रयत्न किया ।

सामान्यतः स्त्री और पुरुषो का अनुपात लगभग समान है। फिर भी हजारों वर्षो से पुरुष स्त्रीयों को 'बला' अथवा 'अवला' का कर ही संबोधित करता है। पुरुष स्त्री को अपने मार्ग की रुकावट मानता है । वस्तुतः हजारों वर्षो से स्त्री को बंधन में रखकर उसे उसके नैसर्गिक अधिकारों से वंचित रखने का कुकृत्य पुरुष ने किया है । वास्तविकता तो यह है कि पुरुष और महिला संसार रुपी रथ यह के दो पहिये है, परंतु पुरुष आगे ही आगे बढता गया और महिलाएँ पिछडती गयी । राष्ट्रसंत का मानना था कि सामाजिक जीवन और राष्ट्रनिर्माण का ज्ञान यदि महिलाओं को हो जाये तो वे पुरुषों से पिछे कतई नही रह सकती । सीता–सावित्री, सुलभा–गार्गी, रानी लक्ष्मी, दुर्गावती और विदुला–जिजाई जैसी कई विदुषियों के नाम इस विषय में पेश किये जा सकते है। इसलिए हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि भक्ति, कला, विद्या, उद्योगशीलता, अन्याय प्रतिकार की क्षमता आदि जितने भी उन्नती के मार्ग धर्म में बतलाये गये है, उस सब पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं के लिए वे खुले कर देने चाहिए और मानवता के नाते उन्हे समान भावना से उन्नत करना चाहिए ।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने जीवन भर मानवता का व्रत लिया था । गॉव से लेकर देश की सीमा तक उपेक्षित झोंपडी से लेकर दिल्ली के राष्ट्रपती भवन तक का कार्यक्षेत्र विस्तृत था । समाज के सभी वर्ग के, जाती के धर्म के लोगो को उन्होने एकत्रित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सामाजिक परिस्थिती में सुधार होने की बजाय अधिकाधिक विकृतीयॉ आने लगी । भ्रष्ट्राचार, हिंसाचार जातीभेद, अमीरी–गरिबी, जादू–टोना इत्यादी अनिष्ट बातों का परिणाम स्त्रीयों पर भी होने लगा । यद्यपि स्त्री भी स्वतंत्र हुई थी परंतु लडका–लडकी यह भेद तीव्र हो गया था । इसलिए राष्ट्रसंत ने ग्रामगीता के माध्यम से स्वतंत्रता, समता और बंधुता इन मूल्यों को समर्थन कर मानवतावादी भूमिका अपनानी, विषमता का समर्थन करने वाले शास्त्रग्रंथो को स्वयं के हाथों से फेंक देने की विद्रोही भूमिका वे अपनाते है। प्राचीन कालीन स्त्रीयों के प्रमाण वे देते है। स्त्री को पशुवत समझा गया इसलिए समाज और राष्ट्र की यह दुर्दशा हुयी है। यह निष्कर्ष वे निकालते है।

राष्ट्रसंत को इस बात का अहसास था की यदि महिलायें बुध्दिमान समाजसेवी, शिक्षित, निडर, वाक्पटु, शक्तिशाली, उद्यमी और सैनिक शिक्षाधारी हो तो उनपर होनेवाले अन्याय अत्याचार का प्रतिकार वे सहजता से कर सकती है, और स्वयं की अवहेलना से बच सकती है। समाजिक ढॉचा उत्कृष्ट बनाने के लिए स्त्रीयों का सर्वगुण संपन्न होना अत्यावष्यक है। यह ध्यान में रखते हुए ही राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने महिलोन्नती का कार्य आरम किया । वे कहते है कि स्त्रीयॉको अबला नही सबला समझे। सयम के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए वे महिलाओं को प्रेरित करते हुए दिखाई देते है। स्वयं के आत्मिक विकास और समाज के विकास के लिए स्त्रीयोंकी शारिरीक षिक्षा पर वे बल देते है। समाज की बुरी प्रवृत्तीयों का डटकर मुकाबला करने के लिए वे महिला संघटनों की आवश्यकता महसूस करते है।

राष्ट्रसंत का कहना था कि महिलाओं के बडे–बडे संध होने चाहिए, जिनका सारा व्यवहार उन्ही के हाथ रहे, महिलाओं को शास्त्रों का अध्ययन करके भक्ति द्वारा अपने जीवन का उध्दार कर लेना चाहिए साथ ही समाज की सेवा के लिए भी अपना जीवन बहा देना चाहिए उनपर 'अबला' शब्द का जो दाग लगाया गया है, वह अपने उज्जवल कर्तव्य से धो डालकर उनके 'सबला' बनने का दरवाजा खोन देना चाहिए और सारी पिछड़ी हुई महिलाओं में भी जागृति का सुप्रकाष फैला देना चाहिए ।

स्त्रीषिक्षा संबंधी संकल्पना प्रस्तुत करते हुए तुकडोजी कहते है, आज स्त्री साक्षरता में वृध्दि हुयी है परंतु उसकी तुलना में स्त्रीयों के शैक्षणिक संस्थाओं की संख्या अत्यंत कम है। स्त्रीयों के लिए अधिकाधिक शालाऐं खुलनी

चाहिए ये संस्थाऐं केवल शैक्षणिक ही न हो बल्की संस्कार संस्था भी हो । आज की शिक्षित स्त्रियों ने अपनी संघटना तैयार करके स्वयं के ही जीवन को एक निष्चित स्वरुप देना चाहिए । संघटना के बिना पुरुष प्रधान सत्ता का प्रतिकार और स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास संभव नाही है।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज जब स्त्री शिक्षा का हितोपदेश देते है, और स्त्रीयों के लिए स्वतंत्र शिक्षा संस्थाओं की बात करते है, तब सहषिक्षा के विरोधी थे ऐसी गलत फहमी होना संभव है। परंतु इस संबंध में वे कहते है, कि "सहषिक्षा ग्रहण करते समय नैतिकता दुर्लक्षित नही होनी चाहिए ।"

आज परिस्थितियॉं बहुत बदल गयी है। स्त्री जीवन का चित्र भी बदल गया है। शिक्षा क्षेत्र में स्त्रियों की दैदिप्यमान सफलता से उनका जीवन उज्जवल हो गया है। स्त्री ने अपने कर्तृत्व के बलबूते पर राजनिती, समाजकार्य षिक्षा क्षेत्र, साहित्य व्यवसाय नौकरी इत्यादी विविध क्षेत्रों षिक्षा क्षेत्र, में सफलता हासिल की है। दहेज विरोधी आंदोलन, स्त्री अत्याचार विरोधी आंदोलन इत्यादि मोर्चो पर उसका नेतृत्व आज उजागर हेने लगा है। घर और बच्चे संभालकर भी वह अपने दैदिप्यमान कर्तृत्व के बल पर जीवन के विविध क्षेत्रो में दिन प्रतिदिन अग्रसर होते जा रही है। स्त्री संबंधी संकुचित मानसिकता आज खत्म होती जा रही है। एक नई–स्त्री का स्वरुप सामने आ रहा है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का यह संपूर्ण प्रयास इस नए समाज निर्माण के लिए ही था । नए समाज के निर्माण के लिए उन्होने स्त्री और पुरुष दोनो को आह्वान किया ।

राष्ट्रसंत द्वारा व्यक्त की गयी भविष्यवाणी आज सत्य सिध्द हो रही है। क्योंकि आज एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है कि जिसमें स्त्रियॉं न हो। ज्ञान के क्षेत्र में बुध्दिमत्ता की दृष्टि से पुरुषों से वे जरा भी कमतर नहीं है, यह उन्होने सिध्द कर दिया है। राष्ट्रसंत स्वीकार करते है कि स्त्री की महत्वा इतनी अशाह है कि उसे शब्दों के सामर्थ से नही बांधा जा सकता ।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के स्त्रीविषयक इस विनम्र उदगार से उनके विषाल और निर्मल अंतः करण और उदार दृष्टिकोण के सहज दर्षन हो जाते है। महिलोन्नती का सर्वव्यापक दृष्टिकोण रखने वाले वंदनीय राष्ट्रसंत को शतशः वंदन ।

संदर्भ

१. लोकराज्य, नंवबर 2000
२. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विचार साहित्य सम्मेलन पाचवे (दि. 08 फरवरी 2003)
३. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज गौरवग्रंथ, सं. प्राचार्य रा.तु. सह. सं. डॉ. सुभाष सावरकर.
४. ग्रामविकासाची संजीवनी ग्रामगीता, ले. प्रा. रघुनाथ कडवे, डॉ. प्रदीप नाकतोडे, अमोल प्रकाषन, नागपूर ।
५. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे आत्कथन, स.प्रा.रघुनाथ कडवे, अमोल प्रकाषन, नागपूर
६. मानवतेचे महापुजारी राष्ट्रसंत तुकडोजी ले.प्रा. रघुनाथ कडवे–अमोल प्रकाषन, नागपूर
७. संत तुकाराम संत तुकडोजी तुलनात्मक दर्षन, ले.प्रा.डॉ. राम धोडे